

धातु → क्रियावाचक 'भू', 'पठ्' आदि को धातु कहते हैं।

सभी धातुओं का अर्थ, अर्थात्, जुड़ोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, कृयादि और भुरादि दस गणों में विभक्त हैं।

इनमें रूप की दृष्टि से कुछ परस्मैपदी, कुछ आत्मनेपदी और कुछ उभयपदी हैं। काल और अवस्था के अनुसार इनका रूप 10 लकारों में होता है। पाठ्यक्रम में केवल 5 लकार निर्धारित हैं।

- ① लट् (वर्तमान)
- ② लृट् (भविष्य)
- ③ लोट् (आज्ञा)
- ④ लङ् (भूत)
- ⑤ लिङ् (विधि)

⇒ इनका रूप तीनों पुरुषों (प्रथम, मध्यम तथा उत्तम) के तीनों वचनों (सकवचन, द्विवचन, बहुवचन) में चलता है।

DEEPAK SINGH RAJPOOT

कृष् (कटना)

61

लट्लकारः (वर्तमान काल)

पुरुषः	सकवचन	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पु.	कृष्यति	कृष्यतः	कृष्यन्ति
मध्यम पु.	कृष्यसि	कृष्यथः	कृष्यथ
उत्तम पु.	कृष्यामि	कृष्यावः	कृष्यामः

लोट लकारः (आज्ञा / प्रार्थना)

प्रथम पु.	कृष्यतु / कृष्यतात्	कृष्यताम्	कृष्यन्तु
मध्यम पु.	कृष्य / कृष्यतात्	कृष्यतम्	कृष्यत
उत्तम पु.	कृष्यानि	कृष्याव	कृष्याम

लङ् लकारः (भूतकाल)

प्रथम पु.	अकृष्यत्	अकृष्यताम्	अकृष्यन्
मध्यम पु.	अकृष्यः	अकृष्यतम्	अकृष्यत
उत्तम पु.	अकृष्यम्	अकृष्याव	अकृष्याम

लिट् लकारः (विधि / सम्भावना)

प्रथम पु.	कृष्येत	कृष्येताम्	कृष्येयुः
मध्यम पु.	कृष्येः	कृष्येतम्	कृष्येत
उत्तम पु.	कृष्येमम्	कृष्येव	कृष्येम

लृट् लकारः (भविष्यत्काल)

प्रथम पु.	कृष्यिष्यति	कृष्यिष्यतः	कृष्यिष्यन्ति
मध्यम पु.	कृष्यिष्यसि	कृष्यिष्यथः	कृष्यिष्यथ
उत्तम पु.	कृष्यिष्यामि	कृष्यिष्यावः	कृष्यिष्याम

संस्कृत शिक्षण में प्रयुक्त उपकरण

- ① श्यामपट्ट (Black Board)
- ② लपेट श्यामपट्ट (Roller Board)
- ③ चार्ट (Chart)
- ④ मानचित्र (Map)
- ⑤ चित्र (Picture)
- ⑥ हरित पट्ट एवं फलालेन बोर्ड
- ⑦ मॉडल या प्रतिरूप



साधन

- ① मॉडल ② वाद विवाद ③ भाषण ④ पुस्तकालय
- ⑤ आकर्षक एवं शिक्षाप्रद कथाविधा
- ⑥ उद्धरण आदि

वीडियो डिस्क (Video Disc)

वीडियो डिस्क एक बड़े रिकार्ड की भांति होता है। इसमें एक मास्टर टेप प्रयोग किया जाता है।

वीडियो डिस्क प्रणाली में वीडियो डिस्क वीडियो प्लेयर और एक टेलीविजन सेट की आवश्यकता होती है। वीडियो डिस्क पर आवाज सहित अथवा बिना आवाज के दृश्य दृष्टियां, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से रिकार्ड की जाती हैं। वीडियो डिस्क प्रणाली में ऑडियो के दो मार्ग होते हैं और एक हल्की प्रकाश देखा होती है जो संनिव विषय-वस्तु को दृश्य-श्रव्य के रूप में पुनरुत्पादित

करती है।

वीडियो डिस्क, वीडियो डिस्क प्लेयर पर घूमती है। समस्त सूचनाएँ लेजर प्रकार की सहायता से टेलीविजन पर प्रदर्शित होती हैं और वही से ये सूचनाएँ सरलता से पढ़ी जा सकती हैं।

वीडियो प्रणाली के प्रकार

- ① कंपैसिटेंस वीडियो डिस्क
- ② ऑप्टिकल वीडियो डिस्क
- ③ बौद्धिक वीडियो डिस्क



वीडियो डिस्क के लाभ

- ① इसमें बहुत बड़ी लाइब्रेरी की हौरी डिस्क पर उतारा जा सकता है।
- ② इस भण्डारण के लिए कम स्थान चाहिए।
- ③ यह सस्ती पड़ती है जब बहुत अधिक संख्या में बनाई जाए।
- ④ इस तक पहुँचना सुगम होता है।
- ⑤ सीखने वाले की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।
- ⑥ विद्यार्थी की कोर्स के सामग्री के साथ अन्य क्रिया की व्यवस्था होती है।
- ⑦ इसमें प्रतिपुष्टि तत्काल मिलने की व्यवस्था है।
- ⑧ स्वचालित प्रेम स्टॉप की व्यवस्था है।
- ⑨ मास्टरी अर्जित करने के लिए पुनरावृत्ति सुविधा है।

- ① वीडियो डिस्क पर उतारी गयी सूचना स्थायी रूप से अंकित हो जाती है। इस पर और नई सूचना अंकित नहीं की जा सकती। जैसे कि वीडियो टेप में हम कर सकते हैं।
- ② वीडियो डिस्क केवल इन्हीं विषयों के लिए उपयोगी होती है, जिनमें कोई निरन्तर परिवर्तन नहीं होता।
- ③ वीडियो डिस्क पर आने वाली लागत को घटाने के लिए उनका उत्पादक व्यापक स्तर पर करना पड़ेगा क्योंकि छोटे समूहों के लिए कोर्स सामग्री वीडियो डिस्क द्वारा प्रस्तुत करना बहुत महंगा पड़ता है।

वीडियो टैक्स

वीडियो टैक्स एक ऐसी प्रणाली है, जिसका पारस्परिक सूचना के आदान प्रदान में प्रयोग किया जाता है। वीडियो टैक्स में घरेलू टेलीविजन एक कंप्यूटर की भाँति कार्य करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा आँकड़ों पर आधारित सूचनारं रूकनित की जा सकती हैं। इसके लिए वीडियो टैक्स में एक रिकॉर्डर, टेलीफोन, टेलीविजन तथा एक की-बोर्ड का प्रयोग किया जाता है।

टैक्स प्रणाली में निम्न भाग होते हैं -

- ① एक की-पैड या की-बोर्ड
- ② एक टी.वी. डिस्प्ले यूनिट
- ③ एक डीकोडर

- ④ एक दूर संचार लिंक
- ⑤ एक केन्द्रीय कम्प्यूटर जिसमें सूचनाओं का आधार हो।

वीडियो टेक्स के प्रमुख लाभ

- ① इस प्रणाली में शिक्षक और छात्र दोनों के मध्य अन्तःक्रिया सम्भव है।
- ② इसमें तुरन्त पृष्ठपोषण के अवसर भी मिलते हैं।
- * यह सामान्य सूचनाओं की जानकारी प्रदान करने का अच्छा साधन है।
- ③ दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रणाली अत्यंत उपयोगी है।
- ④ द्वितीय भाषा की शिक्षा में इसका सफल प्रयोग करने में किया जा सकता है।
- ⑤ यह कम्प्यूटर पर आधारित अनुदेशनों को भी प्रयोग करने में समर्थ है।
- ⑥ यह जन-साधारण के लिए सामान्य सूचना प्राप्त करने तथा छात्रों के लिए विशिष्ट सूचना प्राप्त करने में सक्षम तथा समर्थ प्रणाली है।
- ⑦ दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्गत स्थापित अध्ययन केन्द्रों की समस्त अध्ययन सामग्री तथा अन्य सुविधाएँ वीडियो टेक्स घर बैठे ही उपलब्ध करा देता है।
- ⑧ यह रेडियो टी.वी से अच्छा है, क्योंकि इसमें समय सारणी का कोई बंधन नहीं है।

- ① वीडियो टेक्स में श्रव्य क्षमता नहीं होती ।
- ② यह अभी तक प्रयोगात्मक स्तर पर ही है ।
अतः अभी यह उपकरण महँगा है ।
- ③ इस साधन द्वारा प्रदान किए जाने वाले अनुदेशनात्मक सामग्री अभी बहुत कम हैं तैयार हुई हैं ।
भूक अभी यह दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए ही है इसके लिए कार्यक्रमों का भारी अभाव है ।

इंटरनेट

भारत में इंटरनेट 15 अगस्त 1995 को आरम्भ हुआ
विशेषतायें तथा लाभ

- ① इंटरनेट बड़ी मात्रा में ऑकड़ों की खोज करने में सहायक होता है ।
- ② इंटरनेट में एक स्थान से अनेक स्थान पर प्रसारण संचार की अपेक्षा बिन्दु से बिन्दु तक संचरित होता है ।
- ③ इंटरनेट के द्वारा अनेक मल्टीमीडिया सम्बन्धी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं ।
- ④ विश्व की नवीनतम खबरे प्राप्त करने में यह सहायक है ।
- ⑤ व्यापारिक समस्याओं को करने में काम आता है ।
- ⑥ वैज्ञानिक शोध पर काम करने का एक माध्यम है ।
- ⑦ सूचनाओं का आदान प्रदान करने में सहायक है ।

चार्ट

किसी वस्तु या क्रिया को स्पष्ट करने के लिए चार्ट पेपर पर बनाए गए चित्रों एवं इसके लिखित विवरण को चार्ट कहते हैं।

चार्ट या तो दृश्य से बनाए जाते हैं, या मुद्रित होते हैं।

चार्ट के उद्देश्य (प्रयोग करने में)

- ① प्रकरण की प्रस्तावना निकलवाने में
- ② शिक्षण विन्दुओं के विकास में
- ③ विद्यार्थियों को सक्रिय एवं जिज्ञासु बनाने में।
- ④ पाठ्य-वस्तु को स्पष्ट करने के लिए
- ⑤ प्रदत्त की तुलना करने के लिए
- ⑥ पाठ को सुनिश्चित व बोधगम्य बनाने के लिए



चार्ट के प्रकार

- ① समय चार्ट (ऐतिहासिक तिथियां कालक्रमानुसार)
- ② ग्राफिकल चार्ट (सांख्यिकीय आंकड़े युक्त)
- ③ तालिका चार्ट (क्रमानुसार विवरण युक्त)
- ④ पिक्चर चार्ट
- ⑤ संगठन चार्ट (विभिन्न प्रबन्धों के संगठन का चार्ट)
- ⑥ वृद्धि चार्ट
- ⑦ फलो चार्ट

— X —

① "महिमांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।"

अर्थ → सज्जन लोग स्वभाव से ही मधुरभाषी होते हैं।

② "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्"

अर्थ → सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए,

अप्रिय सत्य को नहीं बोलना चाहिए।

③ "यत्र नारिषां पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।"

→ जहां नारियां पूंजी जाती हैं, वहां देवता निवास करते हैं।

④ "विद्या धर्मेण शोभते।"

→ विद्या धर्म से ही शोभा देती है।



⑤ "न्यायात् पथं विचलन्ति पदं न धीराः।"

→ सज्जन पुरुष न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते हैं।

⑥ "परोपकाराय सतां विभूतयः"

→ सज्जनों की सम्पदा परोपकार के लिए होती है।

⑦ "कर्तव्यं हि सतां वचः।"

→ सज्जन पुरुषों की बात को मानना चाहिए।

⑧ "विभूषणं मौनपण्डितानाम्।"

→ मुखों का सबसे बड़ा गहना चुप रहना ही है।

⑨ कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

→ पुत्र कपूत हो सकता है, लेकिन माता कभी भी कुमाता नहीं होती है।

⑩ "विद्या धन सर्वधनं प्रधानम्।"

→ विद्या धन सभी धनों में सर्वश्रेष्ठ धन है।

- ① पाणिनी के अनुसार संस्कृत वर्णों के सूत्र हैं - 14
- ② संस्कृत में कुल ध्वनियों की संख्या है → 64
- ③ संस्कृत भाषा में कुल स्वर हैं → 21
- ④ संस्कृत भाषा में कुल व्यंजन हैं → 25
- ⑤ संस्कृत भाषा में 'यम' हैं → 4
- ⑥ संस्कृत भाषा में वर्ण के भेद हैं → 2
- ⑦ स्वर कहलाते हैं → अक
- ⑧ स्पर्श व्यंजनों के वर्ग हैं → 5
- ⑨ व्यंजन वर्ण कहलाते हैं → हल
- ⑩ माटेश्वर सूत्रों की रचना की थी - पाणिनि ने
- ⑪ ओउम् में प्लुत स्वर हैं → ओ
- ⑫ प्रत्याहारों की कुल संख्या है → 42
- ⑬ 'उ' प्रयत्न है → विवृत
- ⑭ इक् प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण हैं → इ, उ, ऋ, ॠ
- ⑮ तत्पुरुष समास के भेद होते हैं → 6
- ⑯ बहुव्रीहि समास के भेद होते हैं → 2
- ⑰ किसी बात को सुनकर लिखने को कहते हैं → श्रुतलेख
- ⑱ किसी वाक्य को देखकर ठीक वैसा ही वाक्य लिखना -
→ अनुलेख
- ⑲ किसी के द्वारा बोले हुए वाक्य को लिखना उसे
कहते हैं → सुलेख
- ⑳ भारत में दूरदर्शन का सूत्रपात सर्वप्रथम हुआ →
(15 सितम्बर 1950) 15-9-1950
- ㉑ भारत में सर्वप्रथम कम्प्यूटर का प्रयोग हुआ - 1986
- ㉒ इंटरनेट का सूक्ष्म रूप है → नेट

वीडियो प्रणाली के
तीन प्रकार हैं।



लकार (TENSE)

20 नवम्बर 2017

क्रिया वाचक प्रकृति को 'धातु' कहते हैं। जैसे - भू, स्था, गम, हस इत्यादि।

संस्कृत में मुख्यतः पाँच लकार ही प्रयोग में आते हैं जो कि निम्न हैं -

- 1- लट् लकार (वर्तमान काल) (Present Tense)
- 2- लृट् लकार (भविष्यत काल) (Future Tense)
- 3- लङ् लकार (भूत काल) (Past Tense)
- 4- लोट् लकार (आज्ञा आदि में) (Imperative Tense)
- 5- विधिलिङ् लकार (निमन्त्रादि में) (The potential mood)

* प्रत्येक लकार में तीन पुरुष होते हैं -

1. प्रथम पुरुष 3rd Person
2. मध्यम पुरुष 2nd Person
3. उत्तम पुरुष 1st Person



* प्रत्येक पुरुष में तीन वचन होते हैं -

1. एकवचन (Singular) 2. द्विवचन (Dual) 3. बहुवचन (Plural)
- लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वह (सः/सा)	वे दोनों (तौ/ते)	वे सब (ते/ताः)	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम	तुम (त्वम्)	तुम दोनों (य्वाम्)	तुम सब (युष्मद्)	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम	मैं (अहम्)	हम दोनों (आवाम्)	हम सब (वयम्)	पठामि	पठावः	पठामः

धातुओं के रूप-पठ धातु प्रपठना लट लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	सकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठति	पठतः	पठन्ति
द्वितीय (म)	पठसि	पठथः	पठथ
तृतीय (उ)	पठामि	पठावः	पठामः

लृट लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	सकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
द्वितीय (म)	पठिष्यासि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
तृतीय (उ)	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ लकार (भूतकाल)

पुरुष	सकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट लकार (आज्ञा देने में)

पुरुष	सकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम	पठानि	पठावः	पठामः

विधिलिङ् (-याहिस्, अर्ध में)

पुरुष	सकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम	पठे !	पठेतम्	पठेत
उत्तम	पठेयम्	पठेव	पठेम

गम (गच्छ) जाना

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लट् लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम	गमिष्यासि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट लकार (आज्ञा देने में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम	गच्छानि	गच्छावः	गच्छामः

विधिलिङ् (चाहिये अर्थ में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम	गच्छे	गच्छेताम्	गच्छेत
उत्तम	गच्छेयम्	गच्छेय	गच्छेम

हस धातु

हस धातु लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	हसति	हसतः	हसन्ति
मध्यम पु.	हससि	हसथः	हसथ
उत्तम पु.	हसामि	हसावः	हसामः

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अहसत्	अहसताम्	अहसन्
मध्यम	अहसः	अहसताम्	अहसन्
उत्तम	अहसम्	अहसावः	अहसाम

लृट् लकार (भविष्यकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
मध्यम	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उत्तम	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

लोट् लकार (आज्ञावाचक)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम	हस	हसताम्	हसत
उत्तम	हसानि	हसाव	हसाम

विधिलिङः (चाहिए अर्प में)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	हसेत	हसेताम्	हसेयुः
मध्यम	हसे	हसेताम्	हसेत
उत्तम	हसेयाम	हसेव	हसेम

वद - धानु

लट लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	रूढवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	वदति	वदतः	वदन्ति
मध्यम पु.	वदसि	वदथ	वदथ
उत्तम पु.	वदामि	वदावः	वदामः

लङ लकार (भूतकाल)

पुरुष	रूढवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
मध्यम	अवदः	अवदतम्	अवदन्
उत्तम	अवदम	अवदाव	अवदाम

लृट लकार (भविष्यकाल)

पुरुष	रूढवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वदिष्यति	वदिष्यत	वदिष्यन्ति
मध्यम	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उत्तम	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

लोट लकार (आज्ञावाचक)

पुरुष	रूढवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वदतु	वदताम्	वदन्तु
मध्यम	वद	वदतम्	वदत
उत्तम	वदानि	वदाव	वदाम

विधिलिङ लकार (चाहिए अर्प में)

पुरुष	रूढवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	वदेत	वदेताम्	वदेयुः
मध्यम	वदेः	वदेतम्	वदेतः
उत्तम	वदेयम्	वदेव	वदेम